ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - II APRIL - JUNE - 2020

PART - II

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Govt. College of Arts & Science Aurangabad

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - IX, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF PART - II

अ.क्र.	लेख और लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
१	दैववैद्य अश्विनीकुमार **द्वारकाधीश दिगंबर जोशी**	१-४
२	संस्कृत साहित्य और आरोग्य **डॉ. सत्येंद्र संगाप्पा राऊत**	५-८
३	प्राचीन भारत में चिकित्सा पद्धति **Srimanta Pahari**	९-१३
४	अथर्ववेद में सम्प्राप्त आयुवैदिक चिकित्सा **डॉ. विजय सिंह मीना**	१४-१६
५	वैदिकवाङ्मय में यज्ञचिकित्सा : (यज्ञौपेथी) **Asso. Prof. Dr. S. R. Bharti**	१७-२२
६	भारतीय संगीत चिकीत्या पद्धति **Dr. Vaishali Deshmukh**	२३-२५
७	हिंदी साहित्य में 'आरोग्यम् धनसंपदा' **प्रा. डॉ. शिवसर्जन होनाजी टाले**	२६-२९
८	वेदों में वर्णित यज्ञ चिकित्सा **डॉ. अखिलेश अ. शर्मा**	३०-३३

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - IX, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

६. भारतीय संगीत चिकीत्या पद्धति

Dr. Vaishali Deshmukh
Head Dept. of Mumbai Gov. college of Arts & Sci. Aurangabad.

संपूर्ण विश्व में भारतीय संगीत ही एकमेव संगीत है जा सबसे प्राचीनतम् और पारंपारिक माना जाता है । प्राचीन भारतीयों के जीवन में संगीत कला का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है । वैदिक काल में चार वेदों में सामवेद संगीत संबंधि उपयुक्त वेद माना जाता है । सामगान की शिक्षा महिलाओं की दि जाती थी ऐसे वर्णन किया हुऐ दिखायी देते है । डॉ. शरदचंद्र परांजय के अनुसार, प्रमुख शिक्षा ग्रंथों में पाणिनीय, याज्ञवल्क्य, नारदिय तथा माण्डूकी शिक्षा इ. महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माने जाते है । वेदों से संबंधित विभिन्न स्वरविषयक दृष्टिकोन को समझने के या आधारग्रंथ है । सामवेद के सुत्र ग्रंथ ही 'प्रातिशाख्य' नाम से भी प्रसिद्ध है । प्रतिशाखाँ भवमा । अर्थात् जिसमें प्रत्येक शाखा संबंधी नियमों का वर्णन किया जाता है।

ऋग्वेद प्रातिशाख्य सामवेद का प्रातिशाख्य है । इसमें संगीत के संबंधी सूत्र भी मिलते है । प्रातिशाखों मे ध्वनि और उच्चारण संबंधी विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है । इसमे ध्वनिशास्त्रसंबंधी, अतिमहत्त्वपूर्ण वर्णन किया है । युरोप के विद्वानों ने इस बात को मुक्त कंण्ठ से स्वीकार करते हुए कहा है की ध्वनीशास्त्र में भारत समस्त संसार का प्रतिनिधित्व करता है । प्रातिशाख्यों में श्राव्य एवं अश्राव्य ध्वनी का वर्णन विस्तृत किया है । और इन ध्वनी लहरोंपर ही संपूर्ण विश्व का संगीत आधारित है । भारतीय संगीत संपूर्ण विश्व के संगीत से भिन्न है । और यह भिन्नता संपूर्ण विश्व के संगीत से भिन्न है । और यह भिन्नता भारतीय संगीत की रागगायन में दिखाई देती है ।

मधुन ध्वनीलहरों का मानव की भावभावनाओंपर इस तरह से प्रभावशीलता दिखाई देती है । की मानव अपने आप को भूल जाता है । इतनी शक्ती केवल संगीत में ही है ।

विश्व मे मानव ही एक ऐसा प्राणी माना जाता है जो भावभावनाओंससं विभोर है । भावनात्मकता यह मानव का प्रधान गुठा माना जाता है । भारतीय रागदारी संगीत विश्व में केवल एक मात्र संगीत है जो मनुष् के भावभासवनाओंको प्रभावित करता है ।

भारत वर्ष में वैदिक काल से ही संगीत सें चिकित्सा पद्धती का प्रयोग करते दिखाई देता है । आंतरराष्ट्रीयख्याति प्राप्त डॉ. थॉट के अनुसार मनुष्य के मन और दिखायापर संगीत का इतना असर होता है जिससे उसका मन बदला जा सकता है ।

भारतीय रागदारी संगीत का मुख्य लक्षण सुमधूर स्वर औरलय है । यह स्वरों की लहरीयाँ भारतीय संगीत को अलग, एवं विविधतापूर्ण बनाती है । भारतीय संगीत में रागह अनगिनत है और प्रत्येक राग के अनगिनत भावगूण दिखाई देते है । जिसका प्रयोग चिकित्सा पद्धति में उपयोगपूर्ण दिखाई देती है । भारतीय संगीत में स्वरो का महत्त्व शब्दो से अधिक माना

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

जाता है । और इन स्वरलहरोसे ही मनुष्य का मन प्रभावित होता है । मन के संतुलन का एक प्रभावी, साधन संगीत को माना जाता है ।

भारतवर्ष में संगीत चिकित्सा का दिन १३ मई मनाया जाता है । पं. नारद्व्हारा लिखा गया प्रसिद्ध ग्रंथ संगीत – मकरंद है । ' इस ग्रंथ में रागों का रोगी के मन और शरीर पर प्रभावच पडने का उल्लेख किया गया है । वेदों में संगीत को मोक्ष प्राप्ती का सर्वोत्कृष्ट साधन माना गया है । ऋग्वेद में 'गाथपति' नामक चिकीत्सह का उल्लेख मिलता है । सामवेद मे रोग निवारण के लिये गायन का विधान प्राप्त होता है । अथर्ववेद में ऋक, यजुष और साम वेदके मंत्र थे जो जीवन व्यवहार में स्वास्थ्य से संबंधित थे । सामवेद में उल्लेख मिलता है, यज्ञों के माध्यम से शारीरिक, मानसिक व व्यवहारिक रूप में संतुलित रखने की व्यवस्था थी । ऋषियों और मुनीयों द्वारा 'ओम' उच्चारण से अनेक प्रकारोकी व्याधीयों पर उपचार का उल्लेख मिलता है ।

'ओम' शब्द सें ही संपूर्ण सृष्टी की उत्पत्ती मानी जाती है । संगीतार्षि तुम्बक को प्रथम संगीत चिकित्सक माना जाता है । उन्होंने अपनी पुस्तक संगीत-स्वरामृत' में उल्लेख किया है, की कोमल, मृदू ध्वनीयों का कफ के गुणों पर प्रभाव पडता है ' उँची और असमान ध्वनी का वात पर और गंभीर व स्थिर ध्वनी का पित्तयुक्त शरीर पर प्रभाव पडता है । ऐसी ध्वनीयों पर संतुलन कर लिया जाये तो व्याधीयों का प्रादुर्भाव कम होगा ।

भारतीय संगीत में अनेक रागों का उपयोग चिकित्सापद्धतीमे व्याधीयों को दुर करने के लिये किया जाता है ।

१. हृदयरोग – राग दरबारी व सारंग सुनना लाभदायक होगा ।
२. अनिद्रा – राग भैरवी व सोहनी सुनना लाभदायक होगा ।
३. एसिडीटी – राग खमाज सुनना लाभदायक होगा ।
४. कमजोरी - राग जयजयवंती
५. यादश्त – राग शिवरंजनी
६. ६. खुन की कमी - राग पिलू
७. डिप्रेशन – राग बिहाग व राग मधुवंती
८. रक्तचाप – राग भूपाली
९. अस्थमा – राग मालकंत व राग ललत
१०. सिरदर्द - राग भैरव

भारतीय संगीत में अनेक रागों का चिकित्सा पद्धती में उपयोग किया जाता है । केवल मनुष्य के लिये ही नही बल्की पशु-पक्षियों पर इस चिकित्सा पद्धतिका प्रयोग किया जा रहा है । और यह चिकित्सा पद्धती अधिकाधिक प्रयोग में लायी जा रही है । और यही इसलीये संगीत एक ऐसा विषय है । जो अभूर्त है अपितु इसके अनेक गुण मनुष्य का उपयुक्त है ।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

संदर्भ ग्रंथ सूचि

१. संगीत विशादर – वसंत
२. संगीत रत्नावली – अशोककुमार
३. सारंगमपधानि - मोहनमार्डीकर
४. भारतीय संगीत इतिहास – उमेश जोशी
५. संगीतशास्त्र विज्ञान – डॉ. सुचेता बिडकर

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

Govt. College of Arts & Science
Aurangabad.